International Journal of Academic Research and Development

International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 137-140

पूर्वी उत्तर प्रदेश की डी.ए.वी. कॉलिजों का ऐतिहासिक अध्ययन

यत्नेश यादव

शोधछात्रा, इतिहास विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

प्रस्तावना

महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना के प्रयोजन से जिस प्रकार लाहौर में सन् 1884 में दयानन्द एंग्लो-वैदिक कॉलिज ट्रस्ट एण्ड सोसायटी का निर्माण किया गया था, वैसे ही उसके कुछ वर्ष पश्चात् 1892 में इसी नाम से एक सोसायटी संयुक्तप्रान्त (उत्तरप्रदेश) में भी स्थापित की गई थी।[1] शुरू में इसका कार्यालय मेरठ में था, जिसे सन् 1906 में कानपुर ले जाया गया। यही सोसायटी अब डी.ए.वी. कॉलिज ट्रस्ट एण्ड सोसायटी के बजाय 'दयानन्द शिक्षा-संस्थान' कहलाती है। सोसायटी की इस नये रूप में परिणति सन् 1962 में बाबू वीरेन्द्रस्वरूप द्वारा की गई थी।[2]

डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज, कानुपर[3]

8 जुलाई 1919 ई. के दिन महात्मा हंसराज द्वारा कानपुर में डी. ए.वी. कालेज का उद्घाटन किया गया। कॉलेज के प्रथम प्रधानाचार्य श्री दीवान चन्द्र नियुक्त हुए, वह डी.ए.वी. कॉलिज के लाइफ मेम्बर थे। लाला दीवान चन्द्र ने अपना जीवन आर्य समाज तथा वेदिक धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया। इस तरह से इस कॉलिज ने असाधारण उन्नति की। कानपुर डी.ए.वी. कॉलिज के अन्तर्गत अनेक शिक्षण संस्थाएँ भली-भाँति कार्य कर रही है। जो निम्न प्रकार है :

1. डी.ए.वी. ट्रेनिंग कॉलिज, कानपुर - स्थापना 1948 ई.
2. दयानन्द कॉलिज ऑफ लॉ, कानपुर - 1958 ई.
3. दयानन्द गर्ल्स कॉलिज, कानपुर - 1959 ई.
4. दयानन्द वूमैन्य ट्रेनिंग कॉलिज कानपुर - 1958 ई. में
5. दयानन्द ब्रजेन्द्रस्वरूप कॉलिज, कानपुर - 1959 ई.
6. डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, कानपुर - 1907 ई. में रात्रि पाठशाला तथा 1910 ई. में दिन में पढ़ाई शुरू हो गयी थी।
7. दयानन्द हंसमुखी देवी गर्ल्स इण्टर कालिज कानपुर - 1961 ई.
8. महिला महाविद्यालय किदवई नगर, कानपुर स्थापना - जु. 1969 ई. में
9. कानपुर ग्रीन हाऊस कानपुर, (नर्सरी स्कूल) इस तरह यह संस्था अपने चरमोत्कर्ष पर कार्य कर रही है।

डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज, लखनऊ[4]

इस कॉलिज का संचालन आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ द्वारा किया जाता है। 18 जून, सन् 1918 ई. को गणेशगंज आर्यसमाज ने यह निश्चय किया था कि आर्यसमाज मन्दिर में ही डी.ए.वी. स्कूल की स्थानपा कर दी जाए और इस स्कूल के लिए आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य कम से कम एक मास की आय प्रदान करें। जुलाई, 1918 को यह स्कूल खोल दिया गया और पं. विश्वम्भरनाथ काक उसके प्रधानाध्यापक नियुक्त किए गए, जो 25 वर्ष तक इस पद पर रहकर इस संस्था की उन्नति के लिए लगन के साथ प्रयत्न करते रहे।[5] आर्यसमाज मन्दिर में स्कूल के लिए पर्याप्त स्थान का अभाव था। अतः सन् 1925 में इन्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट से तीन बीघा भूमि किराये पर ली गई और स्कूल के भवनों का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। यही स्कूल निरन्तर उन्नति करता हुआ डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज के रूप में विकसित हो गया और बाद में स्नातक स्तर तथा स्नातकोत्तर स्तर तक की पढ़ाई होने लगी। वर्तमान समय में इस डी.ए.वी. कॉलिज में विद्यार्थियों की संख्या तीन हजार के लगभग है, और 80 के लगभग अध्यापक वहाँ अध्यापन के लिए नियुक्त हैं। लखनऊ का डी.ए.वी. स्नातकोत्तर कॉलिज अपने क्षेत्र की उच्च स्तर की शिक्षण-संस्थाओं में प्रतिष्ठित स्थान रखता है।

डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज, वाराणसी[6]

श्री गौरीशंकर प्रसाद द्वारा स्थापित इण्टर कॉलिज में ही जुलाई, 1938 ई. में डिग्री स्तर की शिक्षा का प्रारम्भ कर दिया गया था। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, दर्शनशास्त्र आदि आर्ट्स वर्ग के विषयों की बी.ए. स्तर की शिक्षा की इस कॉलिज में व्यवस्था है। धर्मशिक्षा का नियमित रूप से कॉलिज में कोई प्रबन्ध नहीं है, पर ऋषिबोधोत्सव और श्रद्धानन्द बलिदान दिवस वहाँ मनाये जाते हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, मैनपुरी[7]

आर्यसमाज द्वारा संचालित इस विद्यालय की स्थापना सन् 1941 ई. में 'दयानन्द एजूकेशन सोसायटी' ने की थी।[8] विद्यालय की स्थापना के समय की प्रबन्धकारिणी में फतेहचन्द्र भार्गव, बाबू प्रेमबिहारीलाल, बाबू विशम्भर सहाय एवं पण्डित शम्भूदयालशुक्ला

(अध्यक्ष) थे।[9] इस संस्था में इन सभी सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ जूनियर हाईस्कूल की स्थापना सन् 1948 ई. में तथा इण्टरमीडिएट की सन् 1952 में की गई थी। इस कॉलिज में केवल बालकों को ही शिक्षा दी जाती है। स्थापना के समय छात्र संख्या 30 थी, परन्तु वर्तमान में छात्र संख्या 460 है। यह कॉलिज शहर में स्थित है। इस विद्यालय में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग की शिक्षा दी जाती है। विद्यालय का वातावरण स्वच्छ एवं नैसर्गिक छटा सर्वत्र बिखरे हुए है। इस विद्यालय के विकास में वर्तमान प्रबन्धक महेशचन्द्र अग्निहोत्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस विद्यालय का क्षेत्रफल 2 एकड़ है। विद्यालय के चारों ओर का वातावरण बहुत ही मनोहर है। इस विद्यालय में विज्ञान, भूगोल तथा सैन्यविज्ञान की प्रयोगशालाएँ स्थित हैं। यह संस्था सुरम्य वातावरण में स्थित है। इस विद्यालय में शिक्षणकक्ष संख्या 14 तथा कार्यालयकक्ष-1, प्रधानाचार्यकक्ष संख्या 1 एवं शिक्षक संख्या 17, लिपिक स्टाफ संख्या 4, कर्मचारियों की संख्या 8 कम्प्यूटर कक्ष-1 है। इस विद्यालय की प्रयोगशाला सुसज्जित है जो कि इस संस्था की उपादेयता और गुणवत्ता में चार चाँद लगाती है। इस विद्यालय की प्रबन्ध समिति विद्यालय को आधुनिकतम सुसज्जित विद्यालय बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील है। विद्यालय में खेलने के लिए एक बहुत बड़ा मैदान है। यहाँ के पुस्तकालय एवं वाचनालय केवल भवन मात्र ही नहीं है। इनमें छात्रों और अध्यापकों के पढ़ने और पढ़ाने के लिए उपयोगी पुस्तकें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहती हैं। वाचनालय में कई दैनिक समाचारपत्रों और मासिक तथा साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाएँ निरंतर आती रहती हैं, जो कि छात्र-छात्राओं के अध्ययन के लिए उपयोगी है। यहाँ कार्यालयकक्ष तथा प्रधानाचार्यकक्ष अत्यन्त अवलोकनीय हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, घिरौर, मैनपुरी[10]

आर्यसमाज द्वारा संचालित उ.प्र. के डी.ए.वी. कॉलिजों का शिक्षा जगत में महत्त्वपूर्ण योगदान है। डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज घिरोर, मैनपुरी उन्हीं में से एक है, जिसकी स्थापना सन् 1960 ई. में हुई थी, जो वर्तमान में 'दयानन्द इण्टर कॉलिज' के नाम से जाना जाता है।[11] यह कॉलिज मैनपुरी शहर से 25 किमी दूरी पर घिरोर नामक कस्बे में स्थित है। यह कॉलिज शहर के बाहरी क्षेत्र में है। जिस समिति के नाम इसका पंजीकरण हुआ था वह 'दयानन्द आर्यविद्यासमिति घिरोर' के नाम से जानी जाती है। इसकी स्थापना का श्रेय प्रबन्धक श्री रघुवीर सिंह चौहान, विश्वस्वरूप राठौर एवं अध्यक्ष श्री जयरामशाह को जाता है।[12] इन सभी के परामर्श से शेष कार्यकारिणी गठित की गई थी। सन् 1966 ई. में इस संस्था को 'उ.प्र. माध्यमिक शिक्षाबोर्ड' से 'हाईस्कूल' की मान्यता प्राप्त हुई, तथा इसके 10 वर्ष पश्चात् 1977 ई. में 'इण्टरमीडिएट' की मान्यता प्राप्त हुई। यह संस्था प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुन्दर वातावरण में स्थित है जिसकी छटा देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त इसमें सहशिक्षा का प्रावधान है। यह संस्था ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। विद्यालय की स्थापना के समय छात्र संख्या 100 थी, परन्तु वर्तमान समय में 735 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं। कॉलिज में केवल कलावर्ग की ही शिक्षा दी जा रही है। जिसमें भूगोल एक प्रयोगात्मक विषय है, इसलिए इस विद्यालय में भूगोल की ही प्रयोगशाला है, छात्रों एवं अध्यापकों के अध्ययन के लिए एक पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था की गई है। वाचनालय में छात्रों को दैनिक समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ पढ़ने को मिलती रहती हैं। वर्तमान समय में इस विद्यालय में 18 अध्यापक एवं 1 प्रधानाचार्य, 8 कर्मचारी एवं 4 लिपिक हैं। यहाँ पर कम्प्यूटर एवं एक कार्यालय कक्ष की भी व्यवस्था की गई है। वर्तमान समय में इसकी प्रबन्धकारिणी के प्रबन्धक श्री प्रदीप कुमार चौहान, राजीव जैन एवं अध्यक्ष जी.पी. सिंह ही हैं। इन सभी ने विद्यालय की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विद्यालय का वातावरण स्वच्छ एवं मनोहर है।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, आर्यपुर खेड़ा (मैनपुरी)[13]

लाला रंग प्रसाद द्वारा इस स्कूल की स्थापना 8 जुलाई, 1949 ई. के दिन की गई थी।[14] इसका प्रबन्ध भी उत्तरप्रदेश की आर्य प्रतिनिधिसभा की विधार्य सभा के नियन्त्रण में है। धर्मशिक्षा की पढ़ाई की नियमित रूप से व्यवस्था तो स्कूल में नहीं है, पर शीत ऋतु में मैनपुरी आर्य समाज की ओर से विद्यार्थियों को वैदिक धर्म से परिचय कराने के लिए उपदेशक भेजे जाते हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, गोरखपुर[15]

इस कॉलिज की स्थापना सन् 1929 में श्री उमाशंकर द्वारा की गई थी।[16] छठी से बारहवीं कक्षा तक इस कॉलिज में पढ़ाई की व्यवस्था है। अपने क्षेत्र के इण्टर कॉलिजों में इसे उच्च स्थान प्राप्त है। विद्यार्थियों की संख्या तीन हजार से अधिक है, और 90 के लगभग शिक्षक वहाँ अध्यापन-कार्य के लिए नियुक्त हैं। पुस्तकालय अच्छा और समृद्ध है, उसमें वैदिक धर्मविषयक पुस्तकों की भी पर्याप्त संख्या है। कॉलिज में धर्मशिक्षा की व्यवस्था नहीं है, पर पढ़ाई प्रारम्भ होने से पूर्व वेदमन्त्रों से सामूहिक प्रार्थना की जाती है। ऋषि बोधोत्सव और महर्षि निर्वाण दिवस आदि आर्य पर्व भी कॉलिज में मनाये जाते हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, बाराबंकी[17]

आर्यसमाज बाराबंकी द्वारा इस स्कूल की स्थापना सन् 1946 में की गई थी।[18] माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार छठी से दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई की व्यवस्था इस स्कूल में है। परन्तु इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए धर्मशिक्षा का भी एक घंटा नियत है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा धर्मशिक्षा की जो परीक्षाएँ ली जाती हैं, विद्यार्थी उनमें भी सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थियों की संख्या 500 के

लगभग हैं। पढ़ाई से पूर्व सामूहिक प्रार्थना भी होती है जिसके बाद व्यायाम भी कराया जाता है।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, बलरामपुर[19]

श्री सुन्दरलाल अग्निहोत्री द्वारा सन् 1941 में इस कॉलिज की स्थापना की गई थी।[20] छठी से बारहवीं कक्षा तक की इसमें पढ़ाई होती है। विद्यार्थियों की संख्या दो हजार के लगभग है। सामान्य शिक्षा के साथ-साथ धर्मशिक्षा की भी इस कॉलिज में व्यवस्था है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित धर्मशिक्षा परीक्षाओं में विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं और ऋषिबोधोत्सव और श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जैसे आर्य पर्व भी कॉलिज में मनाये जाते हैं। यज्ञ-हवन की भी वहाँ व्यवस्था है। कॉलिज के पुस्तकालय में आर्य साहित्य प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सभी अन्य ग्रन्थ वहाँ हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, गाजीपुर[21]

इस कॉलिज की स्थापना सन् 1912 में हुई थी। छठी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई की इसमें व्यवस्था है। सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त धर्मशिक्षा का भी वहाँ प्रबन्ध है, और समय-समय पर यज्ञ भी किये जाते हैं।[22] वार्षिक तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं में एक प्रश्न पत्र धर्मशिक्षा का भी होता है। ऋषि-बोधोत्सव जैसे आर्य पर्व भी कॉलिज में मनाये जाते हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, इलाहाबाद[23]

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तरप्रदेश द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार इस कॉलिज में शिक्षा की व्यवस्था है। धर्मशिक्षा नियमित रूप से वहाँ नहीं दी जाती, पर समय-समय पर धार्मिक विषयों पर प्रवचनों का आयोजन होता रहता है। शनिवार को यज्ञ भी किया जाता है। पुस्तकालय में प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थ विद्यमान हैं।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, उरई (जालौन)[24]

श्री मूलचन्द अग्रवाल द्वारा सन् 1951 में इस कॉलिज की स्थापना की गयी थी।[25] बी.ए., बी.एस.-सी, बी.एड., एम.ए. और एम.एस.-सी. के लिए यह कॉलिज कानपुर यूनिवर्सिटी के साथ सम्बद्ध है। कॉलिज परिसर 50 बीघे से भी अधिक है। इसमें विज्ञान विषयों के लिए 12 प्रयोगशालाएँ हैं और पुस्तकालय, वाचनालय आदि के लिए उपयुक्त सब भवन विद्यमान हैं। इसमें विद्यार्थियों की संख्या दो हजार के लगभग है।

डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज, रजलामई (फर्रुखाबाद)[26]

इस डी.ए.वी. इण्टर कॉलिज की स्थापना फर्रुखाबाद शहर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित 'रजलामई' नामक ग्राम में की गयी थी। यह कॉलिज ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1960 ई. में हुई थी।[27] विद्यालय की स्थापना के समय मौजीलाल गंगवार प्रबन्धक थे।[28] उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से हाईस्कूल की मान्यता 1965 ई. में तथा इण्टरमीडिएट की मान्यता 1990 ई. में कला एवं विज्ञान वर्ग में मिली। इस विद्यालय में छात्र एवं छात्राओं को ही शिक्षा दी जाती है। यह संस्था एक स्वच्छ वातावरण में स्थित है। इस विद्यालय में गाँव के बच्चे ज्यादातर शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस विद्यालय के पास जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान स्थित है। इसका क्षेत्रफल बहुत अधिक है। खेल का मैदान एवं बागवानी भी है। इसमें हर तरह के पेड़-पौधे लगे हुए हैं। पेड़ों को सींचने के लिए हैण्डपम्प की व्यवस्था की गयी है। आर्य समाज द्वारा संचालित यह विद्यालय शिक्षा का उत्कृष्ट केन्द्र है। विद्यालय में मनमोहक वातावरण है। चारों तरफ हरे पेड़ पौधे प्रकृति की मनोरम छटा बिखेर रहे हैं। विद्यालय के वर्तमान प्रबन्धक विश्वनारायण सिंह ने विद्यालय को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में इस विद्यालय में 1000 छात्र संख्या तथा 16 शिक्षण कक्ष एवं 7 शिक्षक उपलब्ध है। कर्मचारियों की संख्या 3 है यहाँ एक कार्यालय कक्ष तथा कम्प्यूटर कक्ष एवं एक प्रधानाचार्य कक्ष है। छात्रों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय तथा वाचनालय की भी व्यवस्था है। पत्र-पत्रिकाएँ तथा समाचार पत्र पढ़ने की भी सुविधा उपलब्ध है। दैनिक समाचार तथा साप्ताहिक पत्रिकाएँ पढ़ने की भी व्यवस्था है। यहाँ पूर्णतः सहशिक्षा है। सभी धर्मों के छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते हैं उनके साथ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।

शोध सन्दर्भ

1. आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के द्वारा नियुक्त अधिकारी ही इन संस्थाओं का संचालन करते हैं।
2. यह विवरण भी साक्षात्कार से प्राप्त हुआ है।
3. इस संस्था के बारे में सम्पूर्ण जानकारी यहाँ के प्राचार्य एवं कार्यालय से प्राप्त हुई।
4. शोधछात्रा ने विभिन्न स्थानों पर स्थित डी.ए.वी. संस्थाओं के अधिकारियों से बात करके यही अनुभव किया है।
5. यह आवश्यक जानकारी हमें कार्यालय से प्राप्त हुई है।
6. इस संस्था के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं मिली है।
7. इस कथन में उक्त इण्टरकॉलिज के कार्यालय से मिली जानकारी ही प्रमाण है।
8. यह विवरण भी यहाँ के प्रधानाचार्य से मिला है।
9. इस विवरण का आधार भी साक्षात्कार है।
10. यह आवश्यक तथ्यजात कार्यालय से उपलब्ध हुए हैं।
11. शोधछात्रा के भरसक प्रयत्न करने के बाद इस संस्था के बारे में जानकारी मिली।
12. इस संस्था का यह विवरण संस्थाधिकारियों के साक्षात्कार पर आधृत है।

13. इस संस्था के बारे में यहाँ के स्थानीय लोगों से जानकारी उपलब्ध हुई है।
14. इस समिति का प्रबन्ध उ.प्र. की 'आर्यप्रतिनिधिसभा' की 'विद्यार्यसभा' के नियंत्रण में है।
15. इस संस्था के बारे में जानकारी कार्यालय से प्राप्त हुई है।
16. इस डी.ए.वी. कॉलिज के बारे में सम्पूर्ण जानकारी नहीं मिली।
17. इस संस्था के विवरण का आधार भी उक्त साक्षात्कार ही है।
18. यह विवरण भी कार्यालय से प्राप्त हुआ है।
19. इस कथन में उक्त इण्टरकॉलिज के कार्यालय से मिली जानकारी ही प्रमाण है।
20. इस संस्था के बारे में पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी है।
21. इस कॉलिज के बारे में उपलब्ध जानकारी का आधार साक्षात्कार ही है।
22. इस संस्था में धर्मशिक्षा का भी प्रबन्ध है।
23. शोधार्थिनी के भरसक प्रयत्न करने के बावजूद इस संस्था से कोई जानकारी नहीं मिली है।
24. यह विवरण भी साक्षात्कार से उपलब्ध हुआ है।
25. यह जानकारी इस संस्था के प्रधानाध्यापक से मिली।
26. इस संस्था का विवरण यहाँ के प्रधानाचार्य एवं कार्यालय से प्राप्त हुआ है।
27. यह जानकारी यहाँ की कमेटी के अधिकारियों से प्राप्त हुई है।
28. यह आवश्यक तथ्यजात इस विद्यालय के कार्यालय से उपलब्ध हुए हैं।